: छठा अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं की विशेषताएँ

: छठा अध्याय :

अश्क के नाटकों की नायिकाओं की विशेषताएँ।

अश्कजी के मन में नारी के प्रति-श्रद्धा होने के कारण उनके पूरे नाटक साहित्य में नारी के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। उन्होंने अपने नाटको में नायिकाओं को केवल एक ही दृष्टि से न देखते हुए उसके अलग-अलग रूप चित्रित किये हैं। गोपालकृष्ण कौल उनके नाटकों की नारी के बारे में कहते हैं "उसके बन्धनों के प्रति उनके मन में क्रोध है, दुःखों और कुण्ठाओं के प्रति समवेदना, सीमाओं के प्रति सहानुभूति, कुप्रवृत्तियों के प्रति व्यंग्य तथा आक्रोश , आदर्शों के प्रति श्रध्दा और महत्वकांक्षाओं के प्रति प्रशंसा है।"[१]

अश्कजी ने नाटकों में नायिकाओं को केवल पाठकों की सस्ती और वासनायुक्त रूचि के लिए चित्रित नहीं किया है। उनका साहित्य यथार्थवादी होने के कारण उन्होंने नायिकाओं के आदर्श, विद्रोही, रूढिबध्द और मानसिक कुण्ठा सें ग्रस्त जैसे विविध रूपों को उजागर किया है।

६.१ आदर्श नायिकाएँ -

नारी के प्रति श्रद्धा भाव होने से अश्क ने नाटकों में नायिकाओं के आदर्श रूप को भी स्थान दिया है। उन्होंने "जय-पराजय" की नायिका बड़ी रानी को उस समय की आदर्श राजपूतानी के रूप में चित्रित किया है। सामन्ती युग की नायिका बड़ी रानी खुद नैतिकता और आदर्श के पथ पर चलती है और पुत्र को भी यही सिखाती है। वह राजपूतानी है और उसमें दृढ़ता के साथ आत्मत्याग, सहिष्णुता और कर्तव्यप्रियता का अद्भुत

१. संकलन - कौशल्या अश्क नाटककार अश्क पृ - १०५

मिश्रण है। उसने अपने पुत्रों को ही केवल मर्यादा और कुल की प्रतिष्ठा की सीख नहीं दी है बल्कि अपने पुत्र चंड का भिष्मव्रत लेना खुद उसके लिए घातक होगा उसके जीवन में सौत लानेवाला होगा यह जानकर भी वह खुद को कर्तव्य-पालन के लिए विवश करती है। राजा लक्षसिंह जब नारियल स्वीकार करने के लिए ना कर देना चाहते हैं तो वह पति से कहती है "शौक से कर दें पर क्या आप को लाज न आयेगी ? क्या मेवाड़ के राज्य-गृह में आया हुआ नारियल किसी दूसरे के यहाँ जायेगा ? क्या मेवाड़ के राणा एक स्त्री को अपनी कहकर, भरे दरबार में कहकर - मैं विवाह करूँगा - उसे त्याग देंगे ? उनके गौरव को धक्का न लगेगा, उनके अभिमान को आँच न आयेगी ?"[१] इसपर भी जब राणा लक्षसिंह विवाह के लिए तैयार नहीं होते हैं तो वह उन्हें कहती है "हाँ अपने पुत्र की बात रखने के लिए, उसकी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए आपको यह कड़वा घूँट पीना ही चाहिए।"[२] वास्तविक राजा से भी अधिक वेदना रानी के मन में है परंतु राजा को अपना कर्तव्य याद दिलानेवाली रानी का आदर्श रूप यहाँ दिखाई देता है।

चंड जब अपनी माँ का निराश चेहरा फटी-फटी आँखें देखकर उसे पूछता है "तुम्हें मेरी प्रतिज्ञा से बहुत दुःख हुआ ?"[३] तब इसके उत्तर में नायिका बड़ी रानी कहती है "नहीं बेटा! तुमने ठीक किया, तुमने मेरी शिक्षा को चरितार्थ किया। मैं - मेरी चिन्ता न करो अपने कर्तव्य पर डटे रहो, मुझे कोई दुख नहीं। जो प्रतिज्ञा की है, उस का जीवन भर पालन करो, उससे गिर गये तो मुझे सुख में भी दुख होगा और उस पर डटे रहे तो मैं दुख को भी सुख करके मानूँगी।"[४] अपने दुःख को पीकर पुत्र को अपना कर्तव्य पालन सिखानेवाली आदर्श नायिका का चित्रण अश्क ने यहाँ किया है।

बड़ी रानी सिर्फ पुत्र को ही उसका कर्तव्य याद नहीं दिलाती बल्कि स्वयं भी अंत तक अपने कर्तव्य को निभाती है। पति राणा लक्षसिंह के युद्ध में मारे जाने पर वह उनके पीछे सती हो जाती है। शुरू से अंत तक अपने दुःख और वेदना को पीकर

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ६२
२. -वही- पृ - ६३
३. -वही- पृ - ७९
४. -वही- पृ - ७९

एक सच्ची राजपूतानी का कर्तव्य निभानेवाली आदर्श नायिका का चित्रण बड़ी रानी के रूप में अश्क ने जय-पराजय में किया है। नायिका बड़ी रानी में न तो राव चूड़ावत की बड़ी रानी कुसुम सी दुर्बलता और असहायता झलकती है और न तारा की सी महत्वकांक्षा। वह राजपूतानी है और उसमें त्याग और कर्तव्यप्रियता का आदर्श रूप दिखाई देता है।

"स्वर्ग की झलक" की नायिका भाभी का भी आदर्श रूप इस नाटक में चित्रित हुआ है। भाभी एक ऐसी नायिका है जो नये और पुराने विचारों के देवर और पति के बीच सामंजस्य स्थापित कर घर को सुखी बनाने का प्रयत्न करती है। पढ़ी-लिखी होने से वह अपने पति की अपेक्षा अधिक समझदार है। पुराने संस्कारों से ग्रस्त उसके पति जब रघु की शादी ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की उमा से नहीं करना चाहते हैं तो बचपन से संभाले हुए अपने देवर रघु को जाननेवाली भाभी भाईसाहब से कहती है "तीन वर्ष का था, जब माँजी परलोक सिधार गयी थी। तब से इसे अपने लड़के की भाँति हमने पाला है। श्रध्दा वह हमसे रखता है, आप कहेंगे तो वह रक्षा से विवाह भी कर लेगा, पर आयुःपर्यन्त जलता-भुनता रहेगा।"[१]

जब भाईसाहब "ये आधुनिक युग की शिक्षित लड़कियाँ तुम्हारी हर उचित-अनुचित बात मानेंगी, इस आशा से हाथ धो रखो।"[२] कहते हैं तो अपनी निःस्वार्थ भाव का परिचय देते हुए वह गर्व से कहती है "मैं रघु की माँ नहीं, उसकी भावज हूँ। इतनी स्वार्थपरता मुझमें नहीं कि अपने आराम के निमित्त उसके जीवन को सदैव के लिए कटु बना दूँ।"[३] भाभी अपने स्वार्थ के लिए बेटे समान देवर का जीवन दाँव पर लगाना नहीं चाहती। वह पति से कहती है "हमें इतना स्वार्थ प्रिय न होना चाहिए। हमने उसे पाला है, पढ़ाया-लिखाया है, अपना कर्तव्य समझकर। अब उसका बदला हम क्यों चाहे ?"[४] भाभी ने रघु का पालन कर अपना कर्तव्य निभाया है उसके बदले में वह कोई अपेक्षा नहीं रखती है। यहाँ उसके सामंजस्य और निर्वहनदायित्व के प्रति सजगता का परिचय मिलता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ७५

२. -वही- पृ - ७५

३. -वही- पृ - ७५

४. -वही- पृ - ७८

भाईसाहब जब आगे की सोचकर उसे कुछ बोलते हैं तो बड़ी व्यवहार कुशलता से वह उन्हें कहती है "परमात्मा ने हमें सब कुछ दिया है। वे अलग होना चाहें, अपने घर प्रसन्न रहें। एकता अच्छी है, पर स्वजन की आत्मा को बन्दी बनाकर उसे प्राप्त करना अच्छा नहीं।"[१]

नायिका भाभी ने रघु को बचपन से पाला है। वह उसके विचारों से अच्छी तरह परिचित है। पुराने विचारोंवाले अपने पति को समझाकर नये विचारोंवाले रघु को अपनी मर्जी के अनुसार जीने का हक देती है। जब उसके पति उमा के पिता के सामने अपने पुराने विचारों को प्रकट करना चाहते हैं तो वह उनसे कहती है "देखिए , परमात्मा के लिए कुछ दिन अपनी जीभ को अपने बस में रखिए। मैं यह मानती हूँ कि आप को ये सब नये विचार पसन्द नहीं, पर शादी आप को तो उससे करनी नहीं, और रहा रघु, तो सुबह आपने उसके विचार सुनही लिये थे, वह इसी में प्रसन्न है।"[२]

"स्वर्ग की झलक" की भाभी ऐसी नायिका है जो अपने निःस्वार्थता और सामंजस्य से पुराने और नये विचारों में संतुलन निर्माण कर अपने परिवार की समस्या को सुलझाती है। वह एक ऐसी आदर्श नारी है जो अध्ययन और शिक्षा के कारण अपने आप को समय के साथ बदलती है और पति को भी यही सीख देती है।

"छठा बेटा" की नायिका माँ एक ऐसी आदर्श नायिका है जो पति और बेटों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए बेटों का बोलना और पति का अत्याचार दोनों भी सहन करती है। माँ का पति एक शराबी और जुआ खेलनेवाला आदमी है। शराब पीकर दिन-दिन भर वह नाले में पड़ा रहता है। वह माँ को मार-पीट करता है। उसे पैसे देना तो दूर बल्कि उसकी ही चीजे बेच डालता है। एक दिन जब उसे मालूम हो जाता है कि पत्नी के पास कुछ पैसे है तो वह उससे पैसे माँगने लगता है। जब माँ दूसरों के कुछ रूपये जो उसके पास है, देने से इन्कार कर देती है तो वह जलती

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ७८

२. -वही- पृ - ८५

लालटेन उसे उठाकर मारता है। जब बच्चे बीच में पड़ते हैं तो वह तलवार उठा लाता है। इन सबके बावजूद भी नायिका माँ निरन्तर उसके साथ सर्दी-गर्मी झेलने और उसके बच्चों को संभालते रहती है।

दस रूपये लेकर आटा लेने गये पं.बसन्तलाल आटा लाना तो दूर की बात रही, खुद शराब पीकर लड़खड़ाते पाँवों से घर आते हैं। एक पाँव से जुता गायब है, कमीज के बटन खुले हैं। अंदर आते ही वे धरती पर लेट जाते हैं। पति का इस तरह बेपरवाह रहना मालूम होते हुए भी नायिका माँ बच्चों से कहती है "इन्हें उठाकर चारपाई पर तो लिटा दो। धरती पर पडे हैं।"[१]

माँ का पति चाहे शराबी हो अपनी जिम्मेदारी से इस वक्त मुँह मोडता हो परंतु उसने अपने पाँच बेटों को इस लायक बना दिया है कि समाज में वे इज्जत के साथ जी सके। बेटे इतने स्वार्थी है कि पिता को अपने घर नहीं रखना चाहते। माँ को बच्चों का पति के साथ इस तरह बर्ताव ठीक नही लगता है। वह बच्चों को समझाती है कि "बेटा, आखिर वे तुम्हारे पिता....।"[२] जब सभी बेटे पिता को पास रखने के लिए इन्कार कर देते हैं तो वह बच्चों से कहती है "क्या मैंने अपनी कोख से सब कुपूत जने! क्या तुममें एक भी ऐसा नहीं जो अपने माता-पिता को उनकी सब त्रुटियों के उनके सब व्यसनों के साथ, अपने पास इज्जत के साथ रख सके ? पुत्र ऐब करते हैं, माँ-बाप डाँटते हैं, झिड़कते हैं, लेकिन उन्हें गले से लगा लेते हैं - और तुम, जिनका एक-एक अणू हमारे रक्त से बना है, जो हमारे कारण इस ऊँचाई पर चढ़े हो - अपने पिता को जेल में भेजने को तैयार हो।"[३]

माँ एक ऐसी आदर्श नारी है जो पति की सारी गलतियों के बावजूद भी हर वक्त सुख-दुःख में उसका साथ देती है। इतनाही नहीं, जो बच्चे पिता को झिड़काते हैं, साथ रखने से इन्कार करते हैं उन्हें डाँटकर समझाती है और घर में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क छठा बेटा पृ - ४३
२. -वही- पृ - १०४
३. -वही- पृ - १०६

"पैंतरे" की नायिका बेगम रशीद भी एक आदर्श नारी है जो पति की इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अपनी छोटीसी छोटी इच्छा को भी मार देती है। उसके पति रशीदभाई स्टँट फिल्मों की दलदल से निकलकर सोशल फिल्मों में कहानी लिखकर नाम कमाना चाहते हैं। इसी सिलसिले में डायरेक्टर कादिर और उसकी पत्नी को चाय पर बुलाया गया है। रशीदभाई अपनी बहन सादिका के घर जानेवाली पत्नी को जाने से मना कर देता है। अपनी खुद की इच्छापूर्ति के लिए वह बेगम रशीद के मन का जरासा भी खयाल नहीं रखता है। वास्तविक बेगम रशीद को फिल्मों से बिलकुल लगाव नहीं हैं परंतु पति की इच्छा के लिए वह कहती है "(अन्तलोगत्वा वह आकांक्षाहीन नारी स्थिति के महत्व को समझ जाती है।) सादिका को समझाना तुम्हारा काम है।"[१]

सोशल फिल्म में कहानी लिखने को मिलेगी इस आशापर रशीदभाई, पत्नी से बिना पूछे ही मिसेस कादिर को अपना फ्लैट पेश करता है। अपना घर जो एक नारी के जीवन भर के सपनों को सँजोये रखता है उसेही रशीदभाई अपने ऊँचा बनने के सपने के लिए दूसरे को देते हैं। इसपर भी बेगम रशीद पति से कुछ नहीं कहती है। डायरेक्टर कादिर और उसकी पत्नी को रशीदभाई नीचे छोड़ने जाते हैं तो बेगम रशीद थककर बैठ जाती है और घर की आया आनी को बर्तन उठाकर ले जाने के साथ-साथ रेडियो का स्वीच घुमाने के लिए कहती है। कुछ क्षण बाद रेडियो से किसी फिल्मी गाने की आवाज आती है, जिससे बेगम रशीद की मनोदशा का हमें पता चलता है -

"सहे दुख तेरी खातिर जो, बलम ओ, तू क्या जाने,
तू क्या जाने
दिन उजियारा बना विरह में, रात अँधेरी काली
उजड़ गयी मेरे जीवन की बगिया तुझ बिन माली
अपने हुये बेगाने
तू क्या जाने
सहे दुख तेरी खातिर जो, बलम ओ, तू क्या जाने।"[२]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क पैंतरे पृ - ३७-३८

२. -वही- पृ - ६३

पति के सोशल फिल्मों में नाम कमाने की इच्छा के लिए बेगम रशीद खुद दुःख सहती है परंतु पति के सामने कभी प्रकट नहीं होने देती है। उसकी इच्छा के लिए वह अपना घर छोडकर शाहबाज के फ्लैट पर उसके साथ रहने के लिए जाती है। मगर मुँह से ऊफ तक नहीं निकालती है। यहाँ बेगम रशीद का आदर्श रूप हमारे सामने आता है।

६.२ विद्रोही नायिकाएँ -

अश्क के नाटकों की नायिकाएँ केवल आदर्शवान और सब-कुछ सहनकर रूढ़ि में बध्द भी नहीं रहना चाहती हैं। बल्कि आज के समाज की कुरीतियों से लड़कर विद्रोह कर उठती हैं। "अलग-अलग रास्ते" नाटक की नायिका रानी एक ऐसी नारी है जो समाज की दहेज जैसी ज्वलन्त समस्या को ठुकराकर अपना रास्ता खुद चुनने का साहस रखती है। रानी दहेज प्रथा के घोर विरोधी है। रानी का पति त्रिलोक लोभी प्रवृत्ति का है। दहेज के लोभ के कारण वह रानी से विवाह करता है परंतु दहेज न लाने के कारण वह रानी को ससुराल के सभी लोगों के ताने सुनने पडते हैं। उसे कंजूष बाप की बेटी कहा जाता है। खुद उसका पति त्रिलोक उन सभी लड़कियों की चर्चा करता है जिनके पिता उससे भी अधिक दहेज देना चाहते थे। ससुराल की इस स्थिति से तंग आकर रानी पिता के घर वापस आती है। पिता पुराने संस्कारों के हैं वे रानी का ससुराल छोड़कर आना पसंद नहीं करते हैं। वे समझौता कर त्रिलोक को मोटर और मकान का लालच देकर रानी को वापस भेजना चाहते हैं। एक साल बाद दहेज के लालच में अलग रहने का बहाना कर त्रिलोक जब रानी को लेने आता है तो रानी उसे कहती है "तो आप उस मोटर और मकान के लिए अलग हो रहे हैं। मैं भी सोच रही थी कि आज रानी पर इतना मोह क्यों उमड आया....।"[१] वह त्रिलोक के साथ नहीं जाना चाहती है। वह उसे कहती है "मुझे न आपका फ्लैट चाहिए, न पिताजी का मकान। आप जाइए।"[२]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   अलग-अलग रास्ते   पृ - १०५

२. -वही-   पृ - १०६

त्रिलोक रानी को बातो में फँसाना चाहता हैं परंतु वह उसकी बनावटी बातों को जानती है। वह क्रोध से उसे कहती है "आप क्या मुझे मूर्ख समझते हैं ? क्या आपका विचार है कि उस अपमान, निरादर और घोर मानसिक यन्त्रणा के बाद, जो आपने दो बरस मुझे दी, मैं इतनी भोली हूँ कि आपकी इन झूठी-मोठी बातों के भूलावे में आ जाऊँगी और समझ लूँगी कि आप एकदम पत्थर से मोम हो गये हैं, कि आपको उस रानी में, जिसे आपने घर से निकाल दिया था, इतने गुण नजर आने लगे हैं कि आप उसे लेने दौड़े आये हैं; .....मैं आपको खूब जानती हूँ, आपकी मोह-ममता को समझती हूँ।"[१] शुरू में अत्याचार सहन करनेवाली रानी अब पति की बनावटी बातों में नही आती है, बल्कि साहस के साथ उसका जवाब देती है।

पिता ताराचन्द जब मकान देकर त्रिलोक के साथ रानी को जाने के लिए कहते हैं तो रानी उनका कहना नहीं मानती है। जो पति उसका मूल्य करना चाहता है उसके यहाँ रहना उसे मंजूरनहीं है। वह पिता से कहती है "जिस व्यक्ति के निकट चन्द हजार के एक मकान का मूल्य मेरे मान से कहीं अधिक है, जो मुझे नहीं, मकान को चाहता है, मै उस लोलुप की शक्ल तक नहीं देखना चाहती।"[२] वह पैसे के लिए लालची होकर पत्नी से प्यार का नाटक करनेवाले पति के साथ जाना नहीं चाहती है। वह आधुनिक युग की विद्रोही नारी है। वह पिता का विरोध करने में भी हिचकिचाती नहीं है। वह पिता से कहती है "मैं पूछती हूँ, इस लोलुपता का पेट आप कब तक भर सकते हैं और मैं भी ऐसी लालची के साथ कब तक रह सकती हूँ ?"[३] झूठी प्रतिष्ठा के लिए पति के साथ जाकर रानी अपना जीवन-नष्ट नहीं करना चाहती है।

जब पिता रानी को धर्म की बातें सुनाकर पति पत्नी के लिए परमेश्वर होता है, सपने में भी उसका बुरा सोचना पाप है कहने लगते हैं तो धर्म के नाम पर नारी को दासी बनानेवाले पुरूषों के विरोध में वह कहती है "आपके धर्म की बातें मैंने

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   अलग-अलग रास्ते   पृ - १०६
२. -वही-   पृ - १२२-२३
३. -वही-   पृ - १२३

बहुत सुन लीं पिताजी, आपका धर्म भी पुरूषों का धर्म है।"[१] जब रानी को मकान उसके नाम पर किया जायेगा ऐसे बताया जाता है तो वह कहती है "आप यह समझते हैं कि ये मकान मेरे नाम करके मुझ पर कोई उपकार कर रहे हैं ? ये मेरे गले में सदा के लिए दासता की बेडी डाल रहे हैं। मुझे ऐसे व्यक्ति के साथ रहने को विवश कर रहे हैं, जिसके लिए मेरे मन में लेश मात्र भी सन्मान नहीं।....ये चाहते हैं, इनके नाम पर, इनके कुल के नाम पर कोई कलंक न आये, चाहे इनकी बेटी घुट-घुट कर मर जाय।"[२] वह पिता को अपनी भूल दिखाती है कि अपने कुल की प्रतिष्ठा के लिए वे अपनी बेटी की जिंदगी बर्बाद कर रहे हैं।

मकान के लालच में ले जानेवाले पति के बारे में वह कहती है "एक मकान के लोभ में वह मुझे ले जायेगा, वह मेरी प्रशंसा और चापलूसी भी करेगा, किन्तु क्या मैं इतना मूल्य चुकाने के बाद उस खरीदे हुए पति को पसन्द कर सकूँगी ? उसका सम्मान कर सकूँगी ? उसे पति-परमेश्वर समझ सकूँगी ?"[३] प.ताराचन्द रानी के इस विद्रोही रूप को देखकर कहते हैं "तू अपने पति के घर जायेगी या इस घर में भी न रहेगी।"[४] तो उसका स्वाभिमान और तीव्र रूप से जाग उठता है। उसमें इतनी शक्ति और विश्वास है कि वह अपना मार्ग स्वयं चुन सकती है। वह पिता की सहायता की अपेक्षा नहीं रखती है। वह कहती है "जहाँ सींग समायेंगे, चली जाऊँगी, किन्तु इस घर में एक पल भी न रहूँगी।"[५] अंत में सचमुच वह अपने भाई के साथ घर छोड़कर चली जाती है।

रानी इस नाटक की आधुनिक और प्रगतिशील नायिका है, जो अपने व्यक्तित्व और विचारों के प्रति जागरूक है। वह पति से समानाधिकार चाहती है। वह उच्चशिक्षित नहीं है फिर भी उसके विचार एक उच्चशिक्षित नारी के विचारों से कम नहीं हैं। वह अपने स्वाभीमान की रक्षा के लिए पिता का घर भी छोड़ देती है। उसे झूठी मर्यादा

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - १२४
२. -वही- पृ - १२४
३. -वही- पृ - १२४-२५
४. -वही- पृ - १२५
५. -वही- पृ - १२५

और कुल की प्रतिष्ठा मान्य नहीं है। आज की जागृत नारी की तरह मुक्त होकर प्रगतिशील पथ की ओर बढ़ने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है।

"उड़ान" की माया भी एक विद्रोही नायिका के रूप में हमारे सामने आती है। स्त्री सुलभ भावना से युक्त माया मदन से प्यार तो करती है परंतु जब नारी को संपत्ति माननेवाला मदन उसे शक की निगाहों से देखता है तो माया विद्रोह कर उठती है। अपने आत्मविश्वास और साहस का परिचय देकर सबका सामना करती है।

रंगुन की बमबारी में घरवालों को खोनेवाली माया एक काफिले में शामिल होती है। उस काफिले में उसे मिला उसका प्रिय साथी मदन भी नाहुँग नदी की लहरों में बह जाता है। उसे खोजती हुई बीमार अवस्था में भटकती हुई वह शंकर और रमेश के कैम्प में सहारा लेती है। शंकर एक शिकारी होने से उसे शिकार की नजरों से देखता है। एक दिन जब वह उसे अपने वश में कर बाहो में भर लेना चाहता है तब माया उसे हाथ से पीछे धकेल देती है और चिढ़कर कहती है "आप लोगों ने मुझे समझा क्या है ? आपने समझा की मैं कोई नीच, तुच्छ, बाजारी कुतियाँ हूँ कि चन्द टुकड़ों के लिए दुम हिलाती हुई मैं आप के पैरें में लोटती रहूँगी।"[१] केवल मुसीबत के चार दिन काटने के लिए वह वहाँ रह रही है। शंकर का बुरा बर्ताव देखकर वह एक पल भी वहाँ नहीं रहना चाहती है। डॉ.सूरजकान्त शर्मा कहते हैं "यह अश्क की नारी है जो भूखी रह सकती है, जंगली जड़ी-बूटियाँ खाकर पेट पाल सकती है, मैले-फटे कपड़े पहनकर तन ढाँप सकती है, लेकिन तुच्छ, नीच, बाजारी कुतिया की तरह चंद टुकड़ों के लिए किसी के पैरें में नहीं लोट सकती, किसी की वासना-तृप्ति का साधन नहीं बन सकती।"[२]

केवल मदन की प्रतीक्षा में वह वहाँ ठहरी है। उसे लगता है एक दिन मदन आयेगा और वह उसके साथ चली जायेगी। एक दिन मदन उसे ढूँढते-ढूँढते वहाँ आ भी जाता है मगर शंकर और रमेश के साथ माया को स्वस्थ देखकर उसके मन मे सन्देह निर्माण होता है। वह कहता है उन्होंने तुम्हें मरते हुए बचाया है। जीवन दिया

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - १३४-३५

२. डॉ.सूरजकान्त शर्मा हिन्दी नाटक में पात्रकल्पना और चरित्र-चित्रण पृ - २०४

है, सुख दिया है वे धनी भी हैं। माया उसे समझाने का बहुत प्रयत्न करती है तब मदन उसे कहता है "तुम्हारी इच्छा! तो चलो।"[१] परंतु खुद की इच्छा न होते हुए भी केवल अपने कहने पर साथ चलने के लिए कहनेवाले सन्देही मदन के साथ माया नहीं जाना चाहती। उसपर व्यंग्य करते हुए वह कहती है "यों शहीद न बनो मदन! जाओ! जब एक बार सन्देह तुम्हारे मन में बैठ गया, तो चाहे मैं सीता की तरह अग्नि-परीक्षा भी क्यों न दे दूँ, उसे अपनी जगह से न हटा सकूँगी। मुझे क्या मालूम था कि तुम्हारी स्वार्थपरता का उदारता में, बुराई का भलाई में यों एकदम बदल जाना भी स्वार्थ ही का दूसरा रूप था। जिस उदण्ड लड़की ने तुम्हें डाँटा था, उसे तुम अपने बस में देखना चाहते थे, अपने इंगितपर चलनेवाली दासी के रूप में देखना चाहते थे। मुझे खेद है, मैंने तुम्हें समझने में भूल की।"[२]

शंकर जब माया को मदन के साथ जाने नहीं देता है तो मदन उसका विरोध नहीं करना चाहता। एक बर्बर शिकारी के हाथों में माया को सौंपना उसे बुरा नहीं लगता तब माया उसे कहती है "यह बन्दूक कन्धे से क्यों लगा रखी है यदि इसके प्रयोग का साहस नहीं तुम्हारे दिल में ?"[३] जब मदन अपना साहस नहीं दिखाता है तो वह खुद शंकर के साथ लड़ने का साहस दिखाती है। बर्बर कहने पर जब शंकर बन्दूक को उसकी ओर घुमाता है तो वह उसे कहती है "जो पुरूष होकर, शक्तिशाली होकर एक थकी, बीमार, विवश स्त्री की बेबसी का अनुचित लाभ उठाना चाहे, जो उसे बचाकर, वह अहसान कर के, जो उस दशा में प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य होता, बदले में उसे अपनी वासना का शिकार बनाना चाहे, वह कायर और बर्बर नहीं तो क्या है? बन्दूक उठाये हुए मुटर-मुटर क्या तक रहे हो ? दबाओं घोड़ा, बनाओ मेरे सीने को छलनी, दो अपने साहस का सबूत। मैं किसी काय हिरनी की तरह भागूँगी नहीं, तुम्हारी गोली का शिकार बनूँगी।"[४]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - १४७
२. -वही- पृ - १४७-४८
३. -वही- पृ - १५१
४. -वही- पृ - १५१

वह खुद भी शिकार करना जानती है। वह अपने पिता के साथ कई बार शिकार पर जा चुकी है। वह बन्दूक तान कर कहती है "नहीं,यदि इसका शिकार करना होता तो मैं उसी दिन इसे खत्म कर देती जिस दिन कि इसने मेरा अपमान किया था, लेकिन तुम लोगों ने मुझे मौत के मुँह से बचाया, मुझे सुख और आराम और सेहत दी। मैं तुम्हारी ऋणी हूँ। तुमने वह पत्थर मेरे निशाने के लिए रखा था न, देखो तो मुझे निशाना बनाना आता है या नहीं।"[१] वह बन्दूक चलाती है और पत्थर गिर जाता है। उसमें इतना साहस है कि वह पुरूष के अत्याचार का मुँह-तोड जवाब दे। अपना अपमान वह चुपचाप नहीं सह सकती। वह तीनों को सम्बोधित कर कहती है "वह असहाय अबला स्त्री मै नहीं, जिसे मदन चाहता है और जो हर समय पुरूष के सहारे की आशा बाँधे, दासी की तरह खड़ी रहती है। वह बीमार हिरनी भी मैं नहीं, जिसे तुम लोग गोद में भरकर मनमानी करना चाहते हो।"[२]

माया अपने व्यक्तित्व के प्रति पूर्णतः सचेत है। वह पुरूष की दासी बनना पसंद नहीं करती है बल्कि सामाजिक कुप्रथाओं के प्रति लड़ने का साहस रखती है। वह कहती है "मैं देवी भी नहीं, जो केवल अपने आसन पर बैठी रहे। तुम एक दासी, खिलौना या देवी चाहते हो, संगिनी की तुम में से किसी को भी जरूरत नहीं।"[३] माया उन तीनों से स्पष्ट कहती है कि नारी कोई श्रध्दा और पूजा का साधन नहीं है, वह ना वासनातृप्ति का साधन है और ना ही पुरूष की संपत्ति है जिसे वह अपनी इच्छानुसार उपयोग करे। वह नारी को पुरूष की सच्ची साथिन मानती है।

'उड़ान' में नायिका माया के द्वारा लेखक ने समाज की झूठी सामाजिक मर्यादा और परम्पराओं के प्रति विद्रोह किया है। माया ऐसी नायिका है जो घुटकर अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहती, बल्कि पुरूषों के झूठे अहंकार के प्रति विद्रोहिणी बनकर लढ़ा देती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - १५२

२. -वही- पृ - १५२

३. -वही- पृ - १५३

६.३ रूढ़िबध्द नायिकाएँ -

अश्क के कुछ नाटकों की नायिकाएँ समाज की रूढ़ि परंपराओं को माननेवाली भी हैं। इन नाटकों में हमें वैवाहिक विषमता का चित्र नजर आता है। अप्पी 'कैद' की ऐसी नायिका है जो माँ-बाप की इच्छा के लिए ऐसे व्यक्ति से शादी करती है जिसकी प्रकृति से उसका बिलकुल साम्य नहीं है।

बहन की मृत्यु के बाद बहन की बच्चों की खातिर उसकी शादी दिप्पो के पति प्राणनाथ से की जाती है। अप्पी पहले दिलीप से प्यार करती थी। शादी के बाद भी वह परंपरा के नुसार बँध तो जाती है परंतु दिलीप के प्यार को भूला नहीं पाती है। केवल विरोध करने का साहस न होने से अपना जीवन घुट-घुटकर नष्ट करती रहती है। दिलीप के आने की खबर सुनतेही घर के नौकर अप्पी के बारे में बातचीत करते हैं। पार्वती किशनसिंह से कहती है "यहाँ आने से पहले इन्हीं के साथ चल रही थी बहुजी की बात-चीत, पर दिप्पी बहू बच्ची को छोड़कर चल बसी और नातिन के खयाल से नानी ने इनको यहाँ ब्याह दिया।"[१]

दिलीप अप्पी से जब उसके पति बच्चे और नन्हें से स्वर्ग की बात करता है तो अप्पी उसे कहती है "आजादी की आग में जलकर कुन्दन बन गये तुम और न टुटनेवाली बेड़ियाँ मेरे पाँवो में बँधती चली गयी।"[२] अप्पी पारिवारिक बंधनों और सामाजिक रूढ़ियों में बँधकर अपने दुःखों को मन ही मन में दबाकर जीवन को धकेल रही है। दिलीप जब अप्पी से कहता है "अरे भई ! तुम आ बैठी यहाँ - काले कोसों दूर।"[३] तो अप्पी उसे पीड़ा से मुस्कराती हुए कहती है "आ बैठी! जैसे स्वयं उठाकर आ बैठी यहाँ। हम गरीबों का क्या हैं, माता-पिता ने जहाँ बैठा दिया जा बैंठी।"[४] अप्पी में सामाजिक बंधनों को तोड़कर जीने का साहस नहीं था इसी कारण माता-पिता ने जहाँ शादी करा दी वही मन के विरोध में भी आ जाती है। अखनूर की प्राकृतिक सुंदरता में भी अप्पी खुश नहीं है। वह हमेशा बीमार रहती है। वह दिलीप से कहती

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ६८
२. -वही- पृ - ६५
३. -वही- पृ - ७०
४. -वही- पृ - ७०

है "मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है,जैसे यह अखनूर मेरा काला पानी है और मैं यहाँ आजीवन कैद कर दी गयी हूँ।"[१] निराशा और खामोशी से वह अपने जीवन के दिन काट रही है। सारी विषमता को वह सहन तो करती है पर उसमे बंधनों को तोड़ने की ताकद नहीं है। धर्मवीर भारती इस नाटक के बारे में लिखते हैं - " "कैद" में नारी बँध गयी है। अपनी आत्मा की मंजिल और सपनों के देवता से दूर, पारिवारिक बंधनों और सामाजिक रूढ़ियों मे आबध्द, वह चट्टानों पर सर पटकती हुई पछाड़े खाती हुई जलधारा की तरह टूट-टूट कर बिखर रही है।"[२] अप्पी सामाजिक मर्यादा की श्रृंखलाओं में आबध्द, असमर्थ सी होकर घुट-घुटकर, जिन्दगी के दिन काट रही है।

कैद में अप्पी की घुटन से भरी बेबस जीवन की झलक दिखाकर लेखक ने उन गलत सामाजिक बंधनों की ओर संकेत किया है जिसका विरोध न करने से अप्पी के समान कई नारियाँ अपना जीवन नष्ट करती हैं।

"बड़े खिलाड़ी" की नायिका सुजला पढ़ी-लिखी लड़की होते हुए भी अपनी इच्छा के विपरीत होनेवाली शादी का विरोध नहीं कर पाती है। उसके माँ और पिता पुराने विचारों को माननेवाले हैं। वे यह नहीं सोच पाते कि सुजला की भी कुछ इच्छा-आकांक्षाएँ होगी। केवल और उसकी बहन शीला दोनों मिलकर सुजला की माँ रत्नप्रभा की सेवा कर उसे अपने जाल में फँसा लेते हैं। अपनी मौसेरी बहन इरा से सुजला कहती है "उन्हीं ने ममी को अपने जाल में फाँसा और मुझे बरबस यहाँ शादी करनी पड़ रही है।"[३] इरा जब उसकी चाहत पूछती है, तो वह कहती है "चाहने न चाहने का प्रश्न ही नहीं उठता। शादी तो होने ही जा रही है।"[४] शादी के बारे में उसकी इच्छा किसी ने पूछी नहीं है और ना ही सुजला शादी से विरोध करती है। विराज नाम के एम.ए.पीएच.डी. लड़के को सुजला चाहती है वह भी उसे चाहता है परंतु रूढ़ि-परंपरा का विरोध कर शादी से इन्कार करने का साहस सुजला में नहीं है वह इरा से कहती है "तुम अपनी मौसी को नहीं जानती। हटाओ! हम गरीबों का क्या हैं। जो भाग्य में है, उसके आगे सिर

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ७२
२. -वही- पृ - १५
३. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ - ४७
४. -वही- पृ - ४७-४८

नवाने में ही कल्याण है।"[१] शादी का विरोध न कर पानेवाली सुजला अपनी बेबसी पर आँसू बहाती रहती है। रोने के सिवा उसके पास अन्य कोई उपाय नहीं है। उसका छोटा भाई हरीश उसका साथ देने के लिए तैयार है फिर भी सुजला उसका कहना नहीं मानती है। सुजला की सहेली तृषा इरा से कहती है "तुम्ही कहो इरा, जब कोई मदद करनेवालों की न माने तो कोई क्या करे - इसके भाई नहीं चाहते कि यह यहाँ शादी करे, चाचा-चाची नहीं चाहते, इससे यह भी नहीं होता कि उनके सामने अपने डैडी से साफ-साफ कह दे कि मैं यहाँ शादी नहीं करूँगी।"[२] सुजला ही नहीं पूरा परिवार इस शादी से असन्तुष्ट है लेकिन सब चुप रहते हैं सिर्फ हरीश पिता के समक्ष नहीं पर पीछे इसका विरोध करता है। उसका कहना है कि यदि रोना छोड़ सुजला अपनी इच्छाओं को प्रकट करती तो हरीश को विरोध करने का अवसर *मिलता* परंतु सामाजिक बंधनों को तोड़ने का साहस सुजला में नहीं है। वह चुपचाप रोने के सिवा कुछ नहीं कर पाती है। हरीश कहता भी है " होने को सब हो सकता था, यदि मुन्नी चाहती, पर वह रोने के सिवा कुछ नहीं जानती।"[३]

सुजला को न शादी की खुशी है और न उसके टूटने का दुःख है। वह सिर्फ जो हो रहा है उसे सहती जाती है। पढ़ी-लिखी होकर नौकरी करते हुए भी अपनी इच्छा प्रकट करने का साहस उसमे नहीं है। "बड़े खिलाड़ी" की सुजला समाज के बंधनों को माननेवाली रूढ़िबध्द नायिका है।

६.४ मानसिक कुण्ठाग्रस्त नायिकाएँ -

अश्क के "भँवर" की नायिका प्रतिभा काल और परिस्थिति के चक्र में पड़कर अस्वस्थ, उलझन भरी और दबी हुई मानसिक कुण्ठाओं से युक्त दिखाई देती है। उसके पास सुन्दरता और बुद्धि का अतुल भण्डार है। जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ उसे उपलब्ध हैं फिर भी वह जीवन से ऊबी हुई है। पहले वह प्रो.नीलाभ की ओर उन्मुख

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ - ६६
२. -वही- पृ - ६८
३. -वही- पृ - १०६

परंतु उनकी विरक्तता देखकर अपने सहपाठी सुरेश के साथ विवाह कर लेती है। शीघ्र ही बौध्दिक असमानता के कारण उससे अलग हो जाती है। नाटक के शुरू में ही वह उकताहट, घुटन और बेचैनी से युक्त दिखाई देती है। वह कहती है "ओह....ओ! कितना बड़ा शून्य है यह जीवन!! कहीं भी तो कोई ऐसी चीज नहीं जो ठोस हो, जिसका सहारा लिया जा सके!"[१]

अपने त्रस्त एकाकी और अभिलाषी मन को वह अपने मित्रों के माध्यम से भरने का प्रयत्न करती है परन्तु उसमें भी वह असफल रहती है। उसका अस्थिर मन न पूरे होनेवाले सपने के पीछे भटकता रहता है। उसका ध्यान बार-बार प्रो.नीलाभ की तरफ जाता है "प्रोफेसर नीलाभ! प्रोफेसर नीलाभ! उनके बिना मुझे कहीं शान्ति न मिलेगी। काश वे इतने ऊँचे शिखर पर न बैठे होते। काश वे इतने विरक्त न होते।"[२]

उदास होते हुए भी प्रतिभा ऊपर से मुस्कराने का प्रयत्न करती है, किन्तु उसकी छिपी घुटन तथा अशान्ति व्यक्त हुए बिना नहीं रहती। वह स्वयं अपने बारे में कहती है "कई बार जी चाहता है कि अपनी सब उदासी, सब घुटन, सारी बेचैनी कागज पर उतार दूँ। बहुत सोचती हूँ, खाके बनाती हूँ, पर जब लिखने बैठती हूँ तो दो सतरें भी नहीं लिख पाती।"[३]

अभावग्रस्त जीवन के कारण उसे न फिल्मी गाने अच्छे लगते हैं और न प्रकृति सौंदर्य। वह अपनी ओर आकर्षित प्रत्येक पुरूष में सौंदर्य, बौद्धिकता, फक्कडपन देखती है परंतु उनके साथ वह अपने भावी जीवन का स्वप्न पूरा होता नहीं देखती है और फिर उसी मोड पर आकर खड़ी होती है जहाँ वह पहले थी। वह प्रो.नीलाभ के प्रति अपने प्रेम को भूला नहीं पाती है। उनके सपनों के ईर्द-गिर्द चक्कर खाती रहती है। अपने सपनों से बाहर न निकलनेवाली प्रतिभा कहती है "क्या अपने खौल के भीतर मैं भी सिर्फ एक बच्ची हूँ - बच्ची जो चाँद को चाहती है और खिलौनो से जिसकी तसल्ली नहीं होती! लेकिन चाँद बहुत ऊँचा है - बहुत दूर है - नीलाभ - नीलाभ - उफ!"[४]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ - ५३
२. -वही- पृ - १०६
३. -वही- पृ - ७०
४. -वही- पृ - १११-१२

शुरू से अंत तक प्रतिभा अपनी निराशा, प्रेम की असफलता और एकाकीपन में डुबी हुई नजर आती है।

अश्क के "अंजोदीदी" नाटक की नायिका अंजो भी दमन का प्रतीक है। बचपन में गोद ले गये नाना के विचारों का उसके मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि उसकी यह मनोवृत्ति केवल वृत्ति न रहकर उसके व्यक्तित्व का एक अंग बन जाती है। सफाई, समय की बंदीश और नियमबद्धता उसे अपने नाना से संस्कार के रूप में मिले हैं जिसका वह बात-बात पर उल्लेख करते हुए कहती है "हमारे नानाजी कहा करते थे .....।" उसके सारे नियम उसके नाना के नियम हैं। वह बार-बार नाना के विचारों को प्रकट करती है "हमारे नानाजी कहा करते थे.....समयनिष्ठा सभ्यता की पहली निशानी है।"[१] उसी प्रकार - "हमारे नानाजी कहा करते थे, नौकरों को सदा साफ-सुथरा रखना चाहिए।"[२] वह कहती है - "हमारे नानाजी कहा करते थे - बच्चों को आरम्भ ही से अच्छी आदते डालनी चाहिए।"[३] उसी प्रकार "हमारे नानाजी कहा करते थे "सुघड़ापा स्त्री का गहना और सदाचार पुरूष का....।"[४]

नाना के संस्कार उसके मस्तिष्क में इतनी गहराई से बस गये हैं कि उनका निकलना असंभव है। परिणामस्वरूप वह बच्चा और पति के साथ भी सुखी जीवन जी नहीं पाती है। वह चाहती है कि सारी दुनिया उसी तरह जिये, जिस तरह उसके स्वर्गीय नाना जीते थे और जैसा वह स्वयं जी रही है। वह पति और बच्चा ही नहीं नौकरों से भी सबकुछ समय पर करवाती है। शुरू से ही उसमें दमन और आतंक की भावना नजर आती है। सुबह ठीक आठ बजे मेज पर नाश्ता लग जाता है। एक बजे दोपहार का खाना, तीन बजे फिर नाश्ता और नौ बजे रात का खाना इसमें जरासा भी बदल अंजो को बिल्कुल पसंद नहीं है। नौकरों का दैनिक जीवन भी अंजो के संकेत पर चलता है। जीवन की सामान्य आदतें भी अंजो में सनक की सीमा पार कर जाती हैं, जिससे हृदय

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ - ५५
२. -वही- पृ - ५४
३. -वही- पृ - ५६
४. -वही- पृ - ५७

की सहज प्रवृत्तियाँ दब जाती हैं। अपने छोटे बच्चे नीरज का खेलने का, पढ़ने का, सोने का समय अंजो ने तय कर रखा है। इन्द्रनारायण साहब को चाट पसंद होते हुए भी छः बरस से उन्होंने चाट को हाथ नहीं लगाया है। पसीने से लतपत उसका छोटा भाई श्रीपत आतेही जब अपने जीजाजी के गले लग जाता है तो वह उसे पहले नहाने के लिए कहती है। जीवन की सामान्य बातों में भी वह नियमबध्दता और शिष्टता लाती है। इसी कारण वह आत्मघात भी कर लेती है। इन सब के पीछे अंजो की कुण्ठित और अस्वस्थ मनोवृत्ति है।

६.५ निष्कर्ष -

नारी के प्रति श्रद्धा होने से अश्क का नाटक साहित्य ज्यादातर नारी पर दृष्टिकोण डालनेवाला है फिर भी उन्होंने अपने नाटकों की नायिकाओं को केवल एक ही साँचे में बध्द नहीं रखा है। उन्होंने नायिकाओं के विविध रूपों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया हैं। यथार्थवादी समाज में निर्माण होनेवाली नारियों की अलग-अलग समस्याओं को अश्क ने अपने नाटकों की नायिकाओं के द्वारा चित्रित किया हैं। अश्क के नाटकों की नायिकाएँ ना ही सिर्फ आदर्शवादी है बल्कि आदर्श के साथ-साथ विद्रोही, रूढ़िबध्द और मानसिक कुण्ठाग्रस्त नायिकाओं का चित्रण कर उन्होंने नायिकाओं के विभिन्न रूपों की झलक दिखायी है। "जय-पराजय" में बड़ी रानी के रूप में राजपुती आदर्श नायिका का चित्रण बड़ी सफलता से किया है। "उड़ान" और "अलग-अलग रास्ते" की नायिका माया और रानी विद्रोह कर स्त्री को संपत्ति समझकर दासी माननेवाले और पैसे की लोलुपता पर उसका स्वीकार करनेवाले पुरूषों के झूठे अहं को तोड डालती हैं। कुछ ऐसी रूढिबध्द नायिकाएँ भी हैं जो सामाजिक मर्यादा तथा परम्परा को तोडने का साहस न होने से अपना जीवन खुद बर्बादी के रास्ते पर बढ़ाती हैं। कुछ नायिकाएँ मानसिक कुण्ठा से इतनी ग्रस्त हैं कि वे उस मनोवृत्ति से अंत तक बाहर नहीं निकल पाती।

-o-o-o-o-